चम्पारण सत्याग्रह के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य मोतिहारी में आयोजित समारोह में महामहिम राज्यपाल, श्री राम नाथ कोविन्द का संबोधन

(दिनांक–13.04.2017, समय–पूर्वाह्न–11:30, स्थान–मोतिहारी)

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के 'चम्पारण सत्याग्रह आंदोलन' के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में प्रमुख रूप से उपस्थित केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री राधामोहन सिंह जी, श्रीमती तारा गाँधी जी, श्री बाल विजय जी, श्री दीपांकर श्रीज्ञान जी, विधायक श्री प्रमोद कुमार जी, बी॰आर॰ए॰ बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर के कुलपति प्रो॰ अमरेन्द्र नारायण यादव जी, महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी के कुलपति प्रो॰ अरविन्द कुमार अग्रवाल जी, राजेन्द्र कृषि केन्द्रीय विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर के कुलपति डॉ॰ आर॰सी॰ श्रीवास्तव जी, कार्यक्रम के संयोजक श्री चन्द्रभूषण पाण्डेय जी, कार्यक्रम में उपस्थित बुद्धिजीवीगण, मीडिया प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों!

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी के 'चम्पारण आंदोलन' के शताब्दी–वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित आज के समारोह में उपस्थित होना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। वस्तुतः 'चम्पारण सत्याग्रह' का शताब्दी–समारोह आयोजित कर हम सभी महात्मा गाँधी को महिमा–मंडित नहीं कर रहे, बल्कि इसके माध्यम से हम अपनी उस ऊर्जा और सफलता के मंत्र को पुनर्जीवित करने का प्रयास कर रहे हैं, जिसके बल पर हमने उन अंग्रजों को परास्त कर दिया, जिनके शासन में कभी सूर्यास्त ही नहीं होता था। आज इस समारोह के माध्यम से हम गाँधीजी के आदर्शों में अपनी आस्था प्रकट करने के साथ–साथ, आज की अपनी ज्वलंत समस्याओं के समाधान तलाशने पुनः उनकी शरण में आना चाहते हैं। आज की अपनी समस्याओं के समाधान तलाशने। मुझे लगता है गाँधीजी का 'सत्य और अहिंसा' का संदेश वर्तमान समय में और अधिक प्रासंगिक हो गया है। भौतिकतावाद और अर्थप्रधान संस्कृति के दौर में गाँधी–दर्शन आज इस बात की प्रेरणा देता है कि भौतिक विकास के साथ–साथ, मनुष्य का आध्यात्मिक विकास भी अत्यन्त आवश्यक है। औद्योगिक विकास के दौर में छोटे–छोटे लघु और कुटीर उद्योगों की महत्ता आज भी बनी हुई है। गाँधी का जीवन और उनके संदेश हमें आज भी ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने और स्वदेशी की भावना के अधिक–से–अधिक प्रसार की प्रेरणा देते हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के जीवन और सिद्धांत में पूरी एकरूपता है। गाँधीजी कहा भी करते थे कि 'मेरा जीवन ही मेरे सिद्धांत हैं।'

गाँधीजी का 'चम्पारण–आंदोलन' भारतीय स्वतंत्रता–आंदोलन में 'गाँधी युग' की शुरूआत है। बिहार में चम्पारण जिले को ही यह सौभाग्य प्राप्त है कि दक्षिण अफ्रीका से वापस आकर महात्मा गाँधी ने सर्वप्रथम 'सत्याग्रह–आंदोलन' का बिगुल यहीं फूंका और उन्हें सफलता भी प्राप्त हुई।

मोहनदास करमचंद गाँधी द्वारा 1917 ई॰ में संचालित 'चंपारण सत्याग्रह आन्दोलन' न सिर्फ भारतीय इतिहास, बल्कि विश्व इतिहास की एक ऐसी घटना है, जिसने

ब्रिटिश साम्राज्यवाद को खुली चुनौती दी थी। वे 10 अप्रैल, 1917 को जब बिहार आए, तो उनका एक मात्र मकसद चंपारण के किसानों की समस्याओं को समझना, उनका निदान करना और नील के धब्बों को मिटाना था। एक स्थानीय पीड़ित किसान राजकुमार शुक्ल ने कांग्रेस के 'लखनऊ अधिवेशन' में अंग्रेजों द्वारा जबरन नील की खेती कराये जाने के संदर्भ में गाँधीजी से शिकायत की थी। शुक्ल जी का आग्रह था कि गांधीजी इस आंदोलन का नेतृत्व करें। गांधीजी ने इस समस्या को न सिर्फ गंभीरतापूर्वक समझा, बल्कि इस दिशा में आगे भी बढ़े।

इस आंदोलन का दूरगामी लाभ यह हुआ कि इस क्षेत्र में विकास की प्रारंभिक पहल हुई, जिसके तहत कई पाठशाला, चिकित्सालय, खादी संस्थान और आश्रम स्थापित किए गये। गाँधीजी जानते थे कि 'स्वतंत्रता–आन्दोलन' को मजबूती प्रदान करने के लिए शिक्षा का प्रसार बेहद जरूरी है, इसलिए उन्होंने चम्पारण क्षेत्र में कई शैक्षणिक संस्थाएँ खुलवायीं।

'चम्पारण आन्दोलन' भारत के स्वतंत्रता– संग्राम का एक अद्वितीय अध्याय रहा है। इतिहासकार इसे जंगे–आजादी के इतिहास में 'मील का पत्थर' बताते हैं। गाँधीजी के अन्य सभी आंदोलनों यथा– सविनय अवज्ञा आंदोलन, असहयोग आंदोलन, भारत छाड़ो आंदोलन आदि की पुख्ता नींव चम्पारण के 'सत्याग्रह आंदोलन' के समय ही पड़ी।

अपनी 'आत्मकथा' में गाँधीजी ने लिखा है कि–''यह अक्षरशः सत्य है कि मैंने चम्पारण में ईश्वर का, अहिंसा का और सत्य का साक्षात्कार किया। जब मैं इस साक्षात्कार के अपने अधिकार की जाँच करता हूँ तो मुझे वहाँ के लोगों के प्रति अपने प्रेम के सिवा कुछ भी नही मिलता। चम्पारण के वे दिन मेरे जीवन में कभी न भूलने जैसे हैं। मेरे लिए और किसानों के लिए ये उत्सव के दिन थे।'' बाद में, गाँधीजी ने मीरा बेन को सन् 1927 में लिखे अपने एक पत्र में भी स्वीकार किया कि– "Champaran has sacred memories for me. Champaran really introduced me to India." गाँधीजी के इन शब्दों से 'चम्पारण–आन्दोलन' की महत्ता स्वतः झलकती है। वस्तुतः गाँधीजी ने सत्य, प्रेम और अहिंसा के पथ पर चलकर स्वतंत्रता–प्राप्ति का जो आंदोलन छेड़ा, 'चम्पारण आंदोलन' उसी की शुरूआत था।

मित्रों, आज जरूरी है कि हम अपनी 'नई आर्थिक नीति' के निर्धारण के क्रम में इस बात का ध्यान रखें कि सामाजिक विषमता की खाई और अधिक नहीं बढ़े। इस खाई को पाटा जाना बेहद जरूरी है। कृषि पर आधारित अपनी ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सृदृढ़ीकरण की प्रेरणा हमें 'चम्पारण आंदोलन' से मिलती है। समाज और राजनीति में सामूहिक नेतृत्व और सामूहिक प्रयासों का कितना सार्थक नतीजा सामने आता है–यह आज समझने की जरूरत है। समाज के कमजोर तबके और अभिवंचित वर्ग को सामाजिक नेतृत्व एवं शक्ति प्रदान किये बिना देश का समग्र विकास संभव नहीं दिखता। वंशवाद, जातिवाद, सम्प्रदायवाद क्षेत्रवाद जैसी विकृतियों से यथाशीघ्र मुक्ति की प्रेरणा भी हमें चम्पारण के जन–आंदोलन से मिलती है।

मुझे प्रसन्नता है कि राज्य सरकार ने 'चम्पारण–सत्याग्रह' के शताब्दी वर्ष को व्यापक रूप से आयोजित करने का निर्णय लिया है। अभी 10 अप्रैल से इसकी शुरूआत हो चुकी है। राजधानी पटना, मुजफ्फरपुर, बेतिया ही नहीं, पूरे बिहार में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के जीवन–दर्शन पर आधारित कतिपय कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं। पटना में प्रमुख गाँधीवादी

चिन्तकों का राष्ट्रीय विमर्श आयोजित हुआ था, जिसमें गाँधीजी के संदेशों और विचारों के अनुरूप भारत के नवनिर्माण के मार्ग प्रशस्त करने पर चिन्तन हुआ है।

आइये, हम सभी 'चम्पारण सत्याग्रह' के शताब्दी–वर्ष के आयोजन के क्रम में इस बात के लिए दृढ़संकल्पित हों कि हम एक सम्पन्न और सशक्त भारतवर्ष के स्वर्णिम भविष्य के लिए अपने सामूहिक प्रयास और तेज करेंगे तथा भारतीय संविधान और कानून की सर्वोच्चता और मर्यादा की रक्षा हर कीमत पर करेंगे। हम एक ऐसे खुशहाल और शांतिपूर्ण भारतवर्ष का नवनिर्माण करेंगे, जहाँ सबको न्यायपूर्वक विकास के समान अवसर उपलब्ध होंगे। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।